जिससे सेवा का बहुत विस्तार हुआ।

जब दादी पुष्पशांता व दादी शीलइन्द्रा अव्यक्त हो गईं तब दादी प्रकाशमणि जी ने ऊषा को गामदेवी सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका बनाया। ऊषा जी ने अपने जीवनकाल में दक्षिणी मुंबई में दस सेवाकेन्द्रों की स्थापना की। दुबई की सेवा की ज़िम्मेवारी भी हम दोनों पर थी इसलिए हमारा बहुत बार दुबई भी जाना हुआ।

मेरी लौकिक माताजी सन् 2006 में अव्यक्त हो गई तो ऊषा की लौकिक ज़िम्मेवारी भी बढ़ गई। ऊषा जी लौकिक, अलौकिक, गामदेवी सेवाकेन्द्र, आर्ट एण्ड कल्चर विंग आदि की सब सेवायें करती थी, यह बहुत बड़ी बात है। सन् 2008 में ऊषा को कैंसर की बीमारी का आभास हुआ। बायोप्सी कराई और फिर ऑप्रेशन हुआ। कीमोथैरेपी की ट्रीटमेंट के कारण सिर के सब बाल झड़ गये फिर भी देही अभिमानी बन सेवा का कारोबार चलाती रही। सन् 2009 में डॉ. अशोक मेहता तथा अन्य दो डॉक्टर्स द्वारा पाँच घंटे का बड़ा ऑप्रेशन हुआ किंतु फिर भी बीमारी गुप्त रूप में अंदर ही अंदर बढ़ती रही। सन् 2010 के अगस्त मास में दोबारा हॉस्पिटल जाना पड़ा। आखिर 12 सितंबर 2010 को डॉक्टर ने कहा कि हमसे जो हो सकता था, हमने किया, अब इनको घर ले जाइये। कैंसर के कारण ऊषा को असहनीय पीड़ा होती थी फिर भी वे ईश्वरीय सेवा का कारोबार चलाती रही। असहनीय दर्द में शिवबाबा को याद करती थी, फिर मुझे कहती थी कि बाबा ने मेरी सारी पीड़ा ले ली।

इक्कीस सितंबर, 2010 को रात्रि में उसने पहली बार मुझसे ये शब्द कहे, 'आइये, हम अंतिम बार साथ भोजन करते हैं फिर मालूम नहीं कब साथ में भोजन कर सकेंगे।' मैंने पूरा भोजन खाया तथा ऊषा ने सूप आदि तरल भोज्य पदार्थ खाया। सितंबर 22 को प्रात:काल ऊषा सेमीकोमा में चली गई। थोड़ा होश आया तब कहा, 'हू जाऊं छू' अर्थात् मैं जा रही हूँ। ऐसा चार बार कहा और फिर से कोमा में चली गई फिर रात्रि 10 बजकर 10 मिनट पर अपना पुराना शरीर छोड़ा। सितंबर 24 को अग्नि संस्कार किया गया। बाद में भोग के संदेश में अव्यक्त बापदादा ने कहा कि शरीर छोड़ने से पहले ऊषा ने शिवबाबा से वायदा लिया कि आप रमेश के स्वास्थ्य की देखभाल करेंगे तो मैं शरीर छोडूँगी वरना कितनी भी पीड़ा हो, मैं अपना शरीर नहीं छोडूँगी। तब बाबा ने ऊषा को वचन दिया।

भोग संदेश में शिवबाबा ने दो बातें कही, एक तो रोज़ नई-नई चीज़ों का भोग 13 दिन तक लगाया जाये क्योंकि बीमारी के कारण ऊषा बच्ची ने बहुत दिनों से भोजन नहीं खाया है, सिर्फ जूस और सूप लेती रही है। दूसरी बात, बच्ची की इच्छा है कि उसके निमित्त कोई यादगार स्थान बने जहाँ बाबा के बच्चे आकर बाबा का संदेश प्राप्त करते रहें और उसका पुण्य शरीर छूटने के बाद भी मिलता रहे। बाबा ने कहा कि तेरह दिन तक वतन में ऊषा को रखूँगा फिर 14वें दिन स्थूल वतन में बहुत बड़े घराने में भेज दूँगा। उस घर का साक्षात्कार भी ऊषा को कराया जहाँ शिवबाबा उन्हें भेजेंगे। अक्टूबर 7 को सूक्ष्म वतन से ऊषा ने विदाई ली व नये गर्भ में प्रवेश करने तक बापदादा की अंगुली पकड़े रखी। बापदादा ने अनेक वरदान दिये, इस प्रकार वरदानों से सजी-सजाई ऊषा जी आगे का नया जीवन ईश्वरीय सेवार्थ व्यतीत करेंगी। हम सबने मिलकर चौदह दिन मुंबई व आबू में लौकिक-अलौकिक भाई-बहनों के साथ ऊषा जी को पुष्पांजलि, भावांजलि व श्रद्धांजलि अर्पित की।

बीस फरवरी, 2010 को जिस हॉल में हमने पवित्र ईश्वरीय जीवन की स्वर्ण जयंती मनाई, उसी में हमने उनको अंतिम विदाई दी। इस लेखनी द्वारा मैं ऊषा जी के साथ के अपने दिव्य अनुभवों की दास्तान प्रस्तुत कर अपने व अपने परिवार की ओर से उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। ❖